13

परमेश्वर के लोगों के लिए विशेष शब्द

आपने कभी पवित्र बाइबल की व्याख्या के आधार पर स्वर्ग की तस्वीर बनाने की कोशिश की है? सम्भवत: यह उससे भिन्न होगी जिसकी हम आशा करते हैं। हमारा स्वर्गीय घर निश्चय ही हमारी कल्पना से बहुत ऊपर होगा और संसार के सोने, शीशे और मोती से अधिक चमकदार, जिन्हें उसकी व्याख्या के लिए प्रयोग किया जाता है।

यही बात उनके लिए भी सही है, जिन्होंने परमेश्वर के संदेशवाहकों के द्वारा बताये ''राज्य'' और ''कलीसिया'' की तस्वीर बनाने की कोशिश की। इन शब्दों का बाइबल में इतनी बार प्रयोग हुआ है कि इन दोनों शब्दों को समझे बिना हम परमेश्वर के उद्धार की योजना को समझने की आशा नहीं कर सकते।

''राज्य''

बाइबल के दोनों नियमों में परमेश्वर के राज्य की राज्य के रूप में भविष्यवाणी की गई और इसे प्रकट भी किया गया है। पुराने नियम और नये नियम के आरम्भिक भागों में इसकी भविष्यवाणी (पूर्व-सूचना) की गई और प्रेरितों 2 और नये नियम के शेष भाग में इसे पृथ्वी पर वास्तविक रूप में प्रस्तुत किया गया है। क्योंकि राज्य को भविष्यवाणी में कई बार चिह्नों और संकेतों में चित्रित किया गया है, इसलिए इसकी वास्तविकता नबियों के द्वारा दिये गए इसके चित्र से महान और अधिक तेजोमय है। भविष्यसूचक चित्र बिल्कुल सही था, परन्तु प्रतीकात्मक भाषा का उपयोग होने के कारण इस पर रहस्य का पर्दा पड़ा हुआ था।

‘‘राज्य’’ शब्द का महत्व नये नियम के साथ-साथ पुराने नियम में भी है, परन्तु हमारी विशेष रुचि नये नियम में इसके उपयोग में है। नये नियम में परमेश्वर के राज्य को पुराने नियम की भविष्यवाणियों के पूरा होते दिखाया गया है। बाइबल में इस शब्द के इस्तेमाल का अर्थ समझे बिना मसीह की कलीसिया को समझा नहीं जा सकता (पृष्ठ 256 पर परिशिष्ट 4 देखिए)।

आइए इस शब्द पर तीन पहलुओं से ध्यान दें जिनमें हर एक का प्रयोग उस कलीसिया के सम्बन्ध में किया गया है जिसे मसीह ने स्थापित किया।

इसका राजनैतिक प्रयोग

‘‘राज्य’’ शब्द का प्रयोग बाइबल में पहले राजनैतिक अर्थ में किया गया है। उसके राज्य के लिए जो सर्वोच्च सिर, अद्वैत अधिपति और उस शक्तिशाली राज्य का शासक है।

‘‘राज्य’’ शब्द में, राजनैतिक प्रयोग यहोवा का इस्राएल कौम के साथ सम्बन्ध भी दर्शाता है। इस्राएल के इतिहास में, पहले परमेश्वर उनका राजा था। वह उनकी सरकार का अद्वैत अधिपति और उनके धर्म का भी प्रमुख था। इस समय इस्राएल की सरकार *धर्मतन्त्र* थी, अर्थात एक ऐसा राष्ट्र था जिसका शासन परमेश्वर चलाता था। मूसा और इस्राएल के पुत्रों ने, जब देखा कि परमेश्वर ने लाल समुद्र में मिस्रियों को नाश कर दिया, तो उन्होंने गाया, ‘‘यहोवा सर्वदा राज्य करता रहेगा’’ (निर्गमन 15:18)। जब इस्राएल ने सीनै पर्वत के सामने डेरा डाला, तो उन्हें प्रभु की बात कही गई, ‘‘इसलिए अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है; और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे’’ (निर्गमन 19:5, 6क)। यहोवा ने इस्राएल को नियम दिए, जिनके अनुसार उन्हें चलना था, और सब न्याय और धार्मिक कार्य उसी के नाम में किए जाने थे। उसने लड़ाइयों में इस्राएल की अगुआई की और उसकी विजयों का श्रेय प्राप्त किया (गिनती 21:34)। वह इस्राएल का राजा था, और एक राष्ट्र के रूप में, इस्राएल उसके शासन के अधीन था, अर्थात उसका *राज्य* था।

शमूएल के दिनों में, अपने आस-पास के देशों से प्रेरित होकर इस्राएल ने भी मांग की कि परमेश्वर उसे भी एक सांसारिक राजा दे। परमेश्वर ने लोगों की विनती स्वीकार कर ली और शाऊल को उनका पहला राजा होने के लिए दे दिया। इस्राएल का राजा सम्पूर्ण सम्राट नहीं था। वह सहायक शासक और सेवक के रूप में यहोवा

को जवाबदेह था। उसका अधिकार मूसा की व्यवस्था द्वारा सीमित होना था। उसको यहोवा का दास होना था और उसने पृथ्वी पर उसके प्रतिनिधि के रूप में सेवा करनी थी, उसने शत्रुओं से इस्राएल की रक्षा करनी थी, धार्मिकता में इस्राएल की अगुआई करनी थी, और कौम को एकता के सूत्र में बांधना था।

फिर, राजनैतिक अर्थ में एक राज्य में, सर्वसत्ता सज़्मन्न एक राजा, क्षेत्र, शासन करने के लिए प्रजा, और शासन को चलाने के लिए राजा के कानून का होना आवश्यक है। राज्य बड़े या छोटे हो सकते हैं; उनमें सांसारिक भूमि या खानाबदोश कौम का क्षेत्र हो सकता है। ''राज्य'' शब्द में मुज़्य विचार एक राजा का शासन और उस राजा के प्रति नागरिकों की आज्ञाकारिता है।

इसका भविष्य सूचक प्रयोग

बाइबल में ''राज्य'' शब्द का भविष्यसूचक प्रयोग भी है। पवित्र आत्मा के द्वारा राजनैतिक शब्द का प्रयोग उस काम की पूर्वसूचना देने के लिए किया गया, जिसे परमेश्वर ने संसार के अन्त के युग अर्थात मसीही युग में करने का निश्चय किया था।

पुराने नियम में ''राज्य'' की मुज़्य भविष्यवाणी दानिय्येल 2 में मिलती है। दानिय्येल को लिखने के लिए पवित्र आत्मा की अगुआई मिली, कि ''उन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का परमेश्वर एक राज्य उदय करेगा जो अनन्तकाल तक न टूटेगा, और न वह किसी दूसरी जाति के हाथ में दिया जाएगा। वरन वह उन सब राज्यों को चूर-चूर करेगा, और उनका अन्त कर डालेगा और वह सदा स्थिर रहेगा'' (दानिय्येल 2:44)। दानिय्येल के प्रकाशन में भविष्यवाणी किए हुए राज्य के बारे में महत्वपूर्ण सच्चाइयां बताई गईं। पहला, वह स्वर्ग के परमेश्वर के द्वारा स्थापित एक विशेष राज्य अर्थात राजकीय शासन होना था। दूसरा, वह एक ऐसा राज्य होना था जिसने सदा तक रहना था अर्थात उसका अन्त नहीं होना था। तीसरा, इसने स्थिरता में और स्थायित्व में सबसे ऊपर होना था।

और तो और, परमेश्वर के इस राज्य के आने के सज़्बन्ध में भविष्यवाणी को यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के प्रचार में (मत्ती 3:1, 2) और यीशु के प्रचार और शिक्षा में अति महत्व मिला (मत्ती 4:17)। सुसमाचार को मसीह ने राज्य का सुसमाचार कहा (मत्ती 9:35)। बारह प्रेरितों और सत्तर व्यक्तियों को (लूका 10:1-20) यीशु ने यह घोषणा करने के लिए भेजा कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया था (मत्ती 10:7; लूका 10:9)। यीशु के दृष्टांतों का एक तिहाई से अधिक भाग राज्य की सच्चाइयों को

ही उजागर करता है। यीशु ने अपने चेलों को सिखाया कि वे परमेश्वर के राज्य के आने के लिए प्रार्थना करें (मत्ती 6:10)।

राज्य के बारे में यूहन्ना और यीशु की शिक्षा के आधार पर, कई तथ्य सीखे जा सकते हैं; पहला, राज्य का आना परमेश्वर की योजना में विशेष महत्व रखता था। दूसरा, राज्य का आना निकट, ''आ रहा'' या ''पास ही'' था। तीसरा, आने वाला राज्य स्पष्ट तथा दानिय्येल की भविष्यवाणी का पूरा होना था। चौथा, राज्य को लाना परमश्वेर का काम था, मनुष्य का नहीं। पांचवां, जब राज्य आ गया, तो इसमें लोग केवल परमश्वेर की शर्तों को पूरा करने पर ही शामिल हो सकते थे (यूहन्ना 3:5)।

प्रेरितों के काम 2 से आगे, राज्य को हमेशा एक वास्तविकता, ही बताया गया है, जैसे कि उस समय यह अस्तित्व में हो। यीशु ने नीकुदेमुस से कहा था, ''मैं तुझ से सच-सच कहता हूं; जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 3:5)। परन्तु फिलिप्पुस द्वारा मसीह का प्रचार करने के सम्बन्ध में; लूका ने लिखा, ''परन्तु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग,क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे'' (प्रेरितों 8:12)। यदि उस वक्त राज्य अस्तित्व में न होता तो फिलिप्पुस इसका संदेश नहीं सुना सकता था।

''राज्य'' शब्द का प्रयोग तो फिर, परमश्वेर के आत्मिक शासन के लिए है, जो वह उन लोगों पर करता है, जिन्होंने संसार में उसकी इच्छा के सामने समर्पण कर दिया है। इससे शासन और उसके कार्यक्षेत्र का पता चलता है। शासन किसी जीवन पर परमेश्वर का आत्मिक शासन है, और वह आत्मिक क्षेत्र है, जहां पर परमश्वेर का शासन है। मसीह का यह शाही शासन ''कलीसिया'' शब्द में सम्मिलित है: जब कोई सुसमाचार को ग्रहण करके मसीह की इच्छा के आगे झुकता है, तो उसे मसीह की देह अर्थात कलीसिया, में लाया जाता है; और जैसे वह कलीसिया के सिर अर्थात मसीह यीशु के अधीन होकर जीवन व्यतीत करता है, तो वह उसमें पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के रूप में जीवन बिताता है। लोगों के दिलों पर मसीह के शाही शासन से कलीसिया बनती है। इस प्रकार ''परमेश्वर का राज्य'' और ''मसीह की कलीसिया'' वे अभिव्यक्तियां हैं जिनका वही अर्थ हो सकता है जो मसीह ने मत्ती 16:18, 19 में प्रकट किया।

इसका वर्तमान प्रयोग

''राज्य'' शब्द की राजनैतिक पृष्ठभूमि, भविष्यसूचक प्रयोग और नये नियम की वास्तविकता के लिए इस शब्द का वर्तमान, व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिए।

पहला, इसका प्रयोग भविष्यवाणीयुक्त पूर्णता के रूप में होना चाहिए। जिस राज्य की बात दानिय्येल ने की, वह आ चुका है। संसार में शाही शासन के रूप में परमेश्वर का विशेष काम अर्थात वह शासन जिसमें आत्मिक क्षेत्र आता है, अब विद्यमान है। जो परमेश्वर की इच्छा के सामने झुक गए हैं, वे उस शाही शासन के अधीन आ गए हैं। परमेश्वर के आने वाले राज्य के बारे में की गई भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं।

दूसरा, हमें ''राज्य'' शब्द को *वर्तमान वास्तविकता* के अर्थ में प्रयोग करना चाहिए। परमेश्वर का राज्य अब वह नहीं है जो आने वाला हो। मसीह अब उन पर शासन करता है जो आज्ञाकारी बनकर विश्वास से उसकी कलीसिया में आ गए हैं। एक अर्थ में, हमारी प्रार्थना अब यह नहीं होनी चहिए कि ''तेरा राज्य आए,'' बल्कि यह होनी चाहिए कि ''मैं तेरी इच्छा के आगे पूरी तरह समर्पण करूं और तू मेरे जीवन पर शासन करे और मैं तेरे राज्य में रह कर जी सकूं।''

तीसरा, हमें इस शब्द को पृथ्वी पर *परमेश्वर* के स्वर्गीय शासन के एक भाग के रूप में प्रयोग करना चाहिए। परमेश्वर द्वारा विशेष तौर पर चुने हुए लोग अर्थात कलीसिया, पृथ्वी पर उसके राज्य का एक भाग है। यीशु और नये नियम के लेखकों ने दिखाया है कि कलीसिया परमेश्वर का राज्य अर्थात मसीह का राज्य है, जो आ चुका है। राजा के अधीन होने से नागरिक और राज्य बनते हैं। यीशु ने आज्ञाकारी विश्वासियों की इस मंडली को अपनी कलीसिया कहा (मत्ती 16:18, 19)।

चौथा, हमें इस शब्द को *आत्मिक शासन* के संदर्भ में देखना चाहिए। सच्चे मसीही आज मसीह के आत्मिक शासन के अधीन हैं। सच्चे मसीही, परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा के साथ आने वाले अनन्त काल में गहरे और निकट सम्बन्ध में प्रवेश करने की आशा रखते हैं। अब कलीसिया ही राज्य है, परन्तु इसके सदस्य आने वाले अनन्त राज्य की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इसके लिए ''राज्य'' का भावी अर्थ है। मसीह ने कहा ''जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा;...'' (मत्ती 7:21)। पौलुस ने लिखा, ''प्रभु मुझे हर एक बुरे काम से छुड़ाएगा, और अपने स्वर्गीय राज्य में उद्धार करके पहुंचाएगा; उसी की महिमा

युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (2 तीमुथियुस 4:18)। पौलुस परमेश्वर के राज्य में था, किन्तु वह स्वर्गीय राज्य में प्रवेश करने की राह देख रहा था। उसने राज्य को पुराने और नये नियम की भविष्यवाणियों को पूरा होने के रूप में देखा, उस कलीसिया में जिसे मसीह ने बनाया, दिखाई जाने वाली आज की वास्तविकता और अनन्तकाल का वायदा है।

जैसे-जैसे कोई नया नियम पढ़ता है, उसका ध्यान ''राज्य'' शब्द के कम होते जा रहे प्रयोग की ओर जाता है, चाहे वह ''स्वर्ग का राज्य'' हो, ''परमेश्वर का राज्य'' अथवा राज्य के लिए कोई और वाक्यांश। राज्य के हवाले उन्नचास बार मत्ती में, पन्द्रह बार मरकुस में, उन्तालीस बार लूका में, पांच बार यूहन्ना में; आठ बार प्रेरितों के काम में, चौदह बार पौलुस की पत्रियों में, दो बार अन्य पत्रियों में, दो बार इब्रानियों में, और तीन बार प्रकाशितवाक्य में मिलते हैं। इसी प्रकार, नये नियम में ''राज्य'' शब्द का प्रयोग होता है परन्तु कम होता जाता है (पृष्ठ 256 पर परिशिष्ट 4 देखिए)।

मत्ती नये नियम का अकेला लेखक है जो ''स्वर्ग का राज्य'' शब्द प्रयोग करता है। मरकुस, लूका और यूहन्ना केवल ''परमेश्वर का राज्य'' ही इस्तेमाल करते हैं। ''राज्य'' शब्द का प्रयोग तो कम होता है परन्तु प्रेरितों की पुस्तक में पहुंचकर हम देखते हैं, कि, ''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग बढ़ने लगता है। यह तो ऐसे है जैसे पवित्र आत्मा ने ''राज्य'' शब्द के स्थान पर ''कलीसिया'' शब्द दे दिया हो।

''कलीसिया''

पूरे नये नियम के संदेश में इसके मुख्य सम्बन्ध के कारण ''कलीसिया'' शब्द का विशेष महत्व है। ''कलीसिया'' के लिए ''चर्च'' शब्द का अंग्रेज़ी अनुवाद है, जो यूनानी भाषा के नये नियम में 114 बार मिलता है। सम्भवत: यह कहना उचित होगा कि नये नियम में इस शब्द को समझे बिना आज के संसार से मसीह के उद्धार को समझने की आशा नहीं की जा सकती।

इसका सांसारिक प्रयोग

सर्वप्रथम यह शब्द साधारण तथा बिना किसी विशेष धार्मिक अर्थ के था।

इसके प्रयोग का नमूना प्रेरितों 19 में उस दंगे के सम्बन्ध में मिलता है जो इफिसुस में हुआ। मसीहियत के बारे में गड़बड़ी बढ़ गई। लोग साथ की रंगशाला में दौड़ कर

चले गये और बलवा हो गया। लेखक, लूका ने, उनके इकट्ठे होने के बारे में बताया, ''सो कोई कुछ चिल्लाया, और कोई कुछ; क्योंकि *सभा* में बड़ी गड़बड़ी हो रही थी, और बहुत से लोग तो यह जानते भी नहीं थे कि हम किस लिए इकट्ठे हुए हैं'' (प्रेरितों 19:32)।

लूका ने इस आयत में जिस सभा शब्द का प्रयोग किया है, वह इकलिसीया है इस शब्द का अनुवाद कलीसिया हुआ है और इसका अंग्रेज़ी अनुवाद ''चर्च'' है। अन्त में, नगर के मन्त्री ने कहा:

> परन्तु तुम यदि किसी और बात के विषय में कुछ पूछना चाहते हो, तो नियत *सभा* में फैसला लिया जाएगा क्योंकि आज के बलवे के कारण हम पर दोष लगाए जाने का डर है, इसलिए कि इस का कोई कारण नहीं, सो हम इस भीड़ के इकट्ठा होने का कोई उत्तर न दे सकेंगे (प्रेरितों 19:39, 40)।

इसके साथ लूका ने और जोड़ा, ''और यह कहके उसने *सभा* को विदा किया'' (प्रेरितों 19:41)।

नगर सभा के इस वृत्तांत में लूका ने तीन बार यूनानी शब्द इकलिसीया का प्रयोग किया है (प्रेरितों 19:32, 39, 41)। उसने इसका प्रयोग केवल एक भीड़ के लिए फिर, जिस सभा को उसने 32 और 41 आयतों में *इकलिसीया* कहा, उसे आयत 30 में अनियन्त्रित भीड़ के रूप में दिखाया गया है। रंगमंच में सभा या *इकलिसीया* को बुलाया नहीं गया था; यह तो बस घटनाओं के बहाव और गड़बड़ी में हुआ था। लूका ने आयत 39 में उस नियत सभा को जहां कानूनी मामले सुलझाए जाते हैं, इकलिसीया कहा है। लूका के द्वारा इकलिसीया के प्रयोग के प्रकाश में, इस शब्द को किसी भी प्रकार की सभा मानकर, इसके सांसारिक उपयोग से, सोचना बेहतर होगा। कई बार किसी सभा का आयोजन किया जाता है या उसे बुलाया जाता है, और कई बार कोई सभा यूं ही बन जाती है। लूका ने इन में से हर प्रकार की सभा को इकलिसीया कहा।

आज कुछ भाषा विद्वानों का मानना है कि नये नियम के दिनों में इकलिसीया के सांसारिक प्रयोग का अर्थ ''बुलाई सभा'' से अधिक ''केवल सभा'' था। लूका के द्वारा प्रेरितों 19 में इस शब्द का प्रयोग उनके निष्कर्षों की पुष्टि करने की कोशिश करता है।

इकलिसीया के लिए लूका के प्रयोग से हमें समझ आती है कि हमारे प्रभु के द्वारा धार्मिक अर्थ में प्रयोग करने से पहले इस शब्द का प्रयोग सामान्य जगत में किस

प्रकार किया जाता था। शब्द की यह पृष्ठभूमि वह आधार होगी, जिससे हम अच्छी तरह समझ सकते हैं कि हमारे प्रभु ने *इकलिसीया* को किस तरह प्रयोग किया।

इसका धार्मिक प्रयोग

नये नियम में *इकलिसिया* शब्द का धार्मिक प्रयोग भी था।

पुराने नियम से स्पष्ट है कि यहूदी पृष्ठभूमि से लेकर मसीहियत तक परमेश्वर के लोगों में सभा की धारणा रही है। सप्तति अनुवाद अर्थात पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में, इस्राएल की ''मण्डली,'' जो कि इब्रानी में ***कहल*** है, का अनुवाद यूनानी में *इकलिसीया* शब्द के साथ किया गया, विशेषकर जब धार्मिक उद्देश्यों के लिए इस्राएल की मण्डली यहोवा के सम्मुख इकट्ठी हो (व्यवस्थाविवरण 18:15; 31:30; 1 राजा 8:65; प्रेरितों 7:38)।

''समाज'' शब्द (अंग्रेज़ी शब्द सिनागोग) का प्रयोग मूल रूप में किसी विशेष काम को करने के लिए इकट्ठे हुए लोगों की सभा के लिए भी किया जाता था। बाद में इस शब्द को आराधना के लिए इकट्ठा हुई मसीहियों की सभा से जोड़ दिया गया। याकूब ने दोनों यूनानी शब्दों सुनागोग (*Sunagoge*) और इकलिसीया का प्रयोग स्पष्टत: इसलिए किया क्योंकि उसके मन में अपनी पुस्तक के पाठक के रूप में यहूदी मसीही थे। उसने आराधना के लिए इकट्ठी हुई मसीहियों की मण्डली को सुनागोग कहा (याकूब 2:2), और किसी विशेष स्थान में विश्वासियों की देह को उसने इकलिसीया कहा (याकूब 5:14)।

अत: जैसे हमारे प्रभु ने एक शब्द का चयन करके जिसने उसके उद्धार के द्वारा परमेश्वर के विशेष लोगों की पहचान बनना था, शब्द ''कलीसिया'' चुना (मत्ती 16:18), जिसका इसके सांसारिक प्रयोग में अर्थ शायद ''सभा'' था, परन्तु पुराने नियम में इसका अर्थ ''परमेश्वर के लोगों की सभा'' था। हमारे प्रभु ने सांसारिक शब्द को लेकर इसे एक विशेष धार्मिक अर्थ दे दिया। इस शब्द के चयन में उसने इसको सांसारिक और धार्मिक पृष्ठभूमियों से निकालकर अपना नया अर्थ जोड़ दिया। इस शब्द का जो प्रयोग यीशु ने किया, वह परमेश्वर के विश्वव्यापी लोगों के लिए है, जिन्हें मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाया गया है, चाहे वे इकट्ठे हुए हों या न (प्रेरितों 8:3; इफिसियों 1:22)।

इकलिसीया शब्द के सम्बन्ध में जो नया विचार नये नियम में लाया गया है, वह नई धारणा है ''बुलाया गया'' अथवा ''अलग किया हुआ।'' यद्यपि यह शब्द आम

प्रचलित नहीं था, परन्तु जिस प्रकार मसीह ने इसे विशेष रूप से इस्तेमाल किया, यह उसका महत्वपूर्ण भाग है।

पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन भीड़ को बताया, ''क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको हमारा प्रभु परमेश्वर अपने पास बुलाएगा'' (प्रेरितों 2:39)। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों को बताया ''कि तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:12)। परमेश्वर ने सुसमाचार के द्वारा उन्हें बुलाया था। पौलुस ने कहा, ''जिसके लिए उसने तुम्हें हमारे सुसमाचार के द्वारा बुलाया, कि तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह की महिमा को प्राप्त करो'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:14)। इस प्रकार सुसमाचार के द्वारा परमेश्वर के पास बुलाए जाने वाले लोगों को ''कलीसिया'' कहा गया (1 कुरिन्थियों 1:1-3)।

और, पौलुस ने कुलुस्से की कलीसिया को बताया, कि ''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया जिससे हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है'' (कुलुस्सियों 1:13, 14)। पतरस ने कहा कि, ''जिसने तुम्हें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रकट करो'' (1 पतरस 2:9ख)। पतरस ने यह भी लिखा, ''पर जैसा तुम्हारा बुलाने वाला पवित्र है, वैसे ही तुम भी अपने सारे चाल-चलन में पवित्र बनो'' (1 पतरस 1:15)।

यीशु ने मसीही युग में बिना किसी स्थान या विशेष समय को ध्यान में रखते हुए ''कलीसिया'' शब्द को परमेश्वर के लोगों के लिए प्रयोग किया। यद्यपि आज कोई भी मसीही उस मण्डली का सदस्य नहीं है जिसकी स्थापना पिन्तेकुस्त के दिन हुई थी, परन्तु हर युग और हर स्थान के सभी मसीही प्रभु की उसी कलीसिया के सदस्य हैं, जिसकी स्थापना उस दिन हुई थी। यीशु के जी उठने के बाद पहले पिन्तेकुस्त के दिन हर युग के लिए एक ही बार यरूशलेम में कलीसिया की स्थापना हो गई। इसका केवल एक ही जन्म दिन था; यह धर्मत्याग के समयों के बाद या प्रत्येक सदी में बार-बार पैदा नहीं होती।

इसका व्यावहारिक प्रयोग

हमें अपेक्षा होनी थी कि यीशु और पवित्र आत्मा के द्वारा ''कलीसिया'' शब्द को नये नियम में व्यावहारिक ढंग से लाया जाए, और हुआ भी ऐसे ही।

व्यावहारिक प्रयोग में ''कलीसिया'' शब्द को लेखकों ने चार अर्थों में इस्तेमाल

किया। पहला, उन्होंने इसे किसी विशेष स्थान में परमेश्वर के लोगों की मण्डली के लिए प्रयोग किया। पौलुस ने कुरिन्थुस में ''परमेश्वर की कलीसिया'' को लिखा जो मसीह यीशु में पवित्र की गई थी (1 कुरिन्थियों 1:2)। फिलिप्पी की कलीसिया के नाम लिखते हुए, ''सब पवित्र लोगों के नाम जो मसीह यीशु में होकर फिलिप्पी में रहते हैं,'' कहा गया (फिलिप्पियों 1:1)। थिस्सलुनीके के संतों को ''थिस्सलुनीकियों की कलीसिया... जो परमेश्वर पिता और मसीह यीशु में है,'' कहकर सञ्बोधित किया गया (1 थिस्सलुनीकियों 1:1)। किसी विशेष स्थान पर रहने वाले सभी मसीहियों को वहां की ''कलीसिया'' कहा गया। मसीहियों की स्थानीय मण्डली विश्वव्यापी कलीसिया की अभिव्यक्ति है। जब कोई मसीह की कलीसिया का सदस्य बनता है, तो वह उस स्थान पर रहने वाले मसीहियों की देह का अंग बन जाता है।

दूसरा, आत्मा की प्रेरणा से लेखकों ने किसी क्षेत्र की स्थानीय मण्डलियों के लिए ''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग किया। लूका ने लिखा, ''सो सारे यहूदिया, और गलील और सामरिया में कलीसिया को चैन मिला, और उसकी उन्नति होती गई; और वह प्रभु के भय और पवित्र आत्मा की शांति में चलती और बढ़ती जाती थी'' (प्रेरितों के काम 9:31)। कई बार किसी इलाके में कलीसिया को बहुवचन जैसे ''कलीसियाओं'' का पदनाम दिया गया। पौलुस ने गलतियों के नाम पत्र में लिखते हुए ''गलतिया की कलीसियाओं के नाम'' लिखा (गलतियों 1:2)। यूरोप की कलीसिया या यूरोप की कलीसियाएं कहने के लिए ''कलीसिया'' शब्द का इस्तेमाल बाइबल के अनुसार है।

तीसरा, नये नियम के लेखकों ने यह दिखाने के लिए कि कलीसिया कैसे बनी, ''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग किया। उन्होंने इसे कलीसियाओं में लोगों के वर्गों के लिए इस्तेमाल किया। पौलुस ने रोमियों 16 में अपने अभिवादन में ''अन्यजातियों की कलीसियाओं'' की बात की: ''प्रिस्किल्ला और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार। उन्होंने मेरे प्राण के लिए अपना ही सिर दे रखा था और केवल मैं ही, नहीं वरन अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी उनका धन्यवाद करती हैं; और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उन के घर में है ...'' (रोमियों 16:3-5)।

चौथा, इन लेखकों ने आत्मा की प्रेरणा से ''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग आराधना के लिए इकट्ठी हुई मण्डली के लिए किया। कलीसिया का अस्तित्व तब ज़ी होता है जब यह आराधना के लिए इकट्ठी नहीं होती, परन्तु ''कलीसिया'' शब्द का प्रयोग किसी निश्चित स्थान की कलीसिया की सभा के लिए विशेष तौर पर किया गया है। पौलुस ने इकट्ठा होने वाली कुरिन्थुस से कलीसिया कहा (1 कुरिन्थियों 11:18)।

उसने औरतों को कलीसियाओं में चुप रहने के लिए कहा: ''स्त्रियां कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु आधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है'' (1 कुरिन्थियों 14:34)। स्पष्ट है कि वह इस आयत में कलीसिया की आराधना सज़ा की बात कर रहा है।

कोई कलीसिया को कैसे भी पुकारे, वह उन लोगों के बारे में बात कर रहा होता है जिन्हें मसीह के सुसमाचार के आगे समर्पण के द्वारा मसीह की देह में लाया गया है। एक मसीही को संसार और अन्धेरे में से बुलाया गया है और परमेश्वर की कृपा से उस देह में रखा गया है जिसे मसीह ने और आत्मा की प्रेरणा प्राप्त नये नियम के लेखकों ने ''कलीसिया'' कहा।

सारांश

यकीनन ही यह उन शब्दों का संक्षिप्त अध्ययन है जिनका चयन परमेश्वर ने अपने लोगों के लिए उसके राज्य अर्थात कलीसिया में प्रवेश करने की चुनौती के लिए किया। परमेश्वर ने उन सामान्य शब्दों को लिया और उन्हें अतिरिक्त अर्थ देकर, अपने उन लोगों पर लागू किया, जिन्हें उसके अनुग्रह के सुसमाचार के द्वारा उद्धार में बुलाया गया है। इस प्रकार ये शब्द उन सभी के लिए हैं, जिन्होंने परमेश्वर के शासन के आगे समर्पण कर दिया और जो मसीह के लहू के द्वारा छुड़ाये गए हैं। पुरखाओं के और मूसा के युगों के लज़्ज़े समयों में, परमेश्वर ने अपने विशेष लोगों के लिए योजना बनाई। उसने वह सब पूरा कर दिया है जिसकी प्रेरणा उसने अपने सन्देशवाहकों को दी कि वे उसकी पूर्वसूचना दें। अब उसके राज्य में प्रवेश करना और उसकी कलीसिया में मिलाया जाना आप पर निर्भर है।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 239 पर)

1. एक राजा और राज्य के रूप में परमेश्वर के साथ इस्राएल के सज़्ज़न्ध पर चर्चा करें।
2. परमेश्वर के राज्य, इस्राएल पर राजा होने के नाते, इस्राएल के प्रथम राजा शाऊल की क्या ज़िज़्ज़ेदारियां थीं?

3. आने वाले राज्य के सज़्बन्ध में दानिय्येल की भविष्यवाणी में से क्या शिक्षाएं ली जा सकती हैं? (देखिए दानिय्येल 2:44)।
4. नये नियम में ''राज्य'' शब्द के कम होते प्रयोग पर ध्यान दें। इसका क्या अर्थ है?
5. व्याज़्या करें कि आज कोई परमेश्वर के राज्य में कैसे हो सकता है और फिर भी अनन्त राज्य की ओर देख सकता है (देखिए 2 तीमुथियुस 4:18)।
6. नये नियम में ''कलीसिया'' शब्द कितनी बार आया है और इससे इस शब्द के महत्व का क्या पता चलता है?
7. शब्द कलीसिया के लिए साधारण सांसारिक उपयोग बताएं जैसे कि नये नियम में मिलते हैं। एक आयत बताएं जहां पर इसे इस प्रकार इस्तेमाल किया गया है।
8. क्या ''कलीसिया'' शब्द सामान्य अर्थ में हमेशा धार्मिक सभा के लिए प्रयुक्त होता है? क्या यह हमेशा बुलाए गए लोगों की सभा की ओर संकेत करता है, जिसे किसी विशेष उद्देश्य के लिए इकट्ठा होने के लिए बुलाया गया हो?

शब्द सहायता

मसीह की दुल्हन - कलीसिया। कलीसिया से मसीह के साथ सज़्बन्ध की तुलना एक पुरुष के अपनी पत्नी के साथ सज़्बन्ध से की जाती है (देखिए इफिसियों 5:22-29)।

दृष्टांत - आत्मिक सच्चाइयों को समझाने के लिए यीशु सामान्यत: दैनिक जीवन में से कहानियों का प्रयोग करता था (मत्ती 13:34)।

पुरखाओं का युग - बाइबल इतिहास के तीन विलक्षण युगों में से पहला पुरखाओं का युग था जब परमेश्वर परिवारों के सरदारों से सीधे बात करता था। दूसरा मूसा का युग था, जब इस्राएल की सन्तान मूसा को दी गई व्यवस्था (जिसमें दस आज्ञाएं भी शामिल थीं) के अनुसार चलती थी। यह क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय तक रही। तीसरा युग, मसीही युग है। इस युग में उद्धार पाए हुए सभी लोग कलीसिया में मिलाए जाते हैं, तथा डॉक्टरिन (शिक्षा) और आराधना के लिए केवल नया नियम ही ईश्वरीय मापदण्ड है। यह युग यीशु के द्वितीय आगमन तक कायम रहेगा।

भविष्यवाणी – एक भविष्यवक्ता के वचन, जिन्हें परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन के रूप में देखा जाता है; कई बार आत्मा की प्रेरणा से दिया गया भविष्यकथन।

शमूएल – पुराने नियम का एक महान भविष्यवक्ता, याजक, और न्यायी।

अद्वैत अधिपति – राजा या अन्य शासक, जिसके पास सबसे अधिक शक्ति है। 1 तीमुथियुस 6:14, 15 में प्रभु यीशु मसीह को ''परमधन्य और अद्वैत अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' कहा गया है।

संस्थापक:मसीह मत्ती 16:18	**नये नियम की कलीसिया** **कहां: यरूशलेम** यशायाह 2:3; प्रेरितों 2:5, 47 **कब: 33 ईस्वी** प्रेरितों 2 **सिर: मसीह** इफिसियों 1:22
संगठन फिलिप्पियों 1:1	**प्राचीन (ऐल्डर्ज़) :** तीतुस 1:5; 1 पतरस 5:1-3; प्रेरितों 20:28; 1 तीमुथियुस 3:1-7; **सेवक (डीकन्ज़):** प्रेरितों 6:1-6; 1 तीमुथियुस 3:8-13; **सदस्य:** प्रेरितों 2:41-47; कुलुस्सियों 1:13; 1 कुरिन्थियों 1:2
कलीसिया के लिए पदनाम इफिसियों 3:15	**कलीसिया:** कुलुस्सियों 1:18, 24; **मसीह की देह:** इफिसियों 1:22, 23; **राज्य:** प्रेरितों 8:12; **मसीह की कलीसियाएं:** रोमियों 16:16; **परमेश्वर की कलीसिया:** 1 कुरिन्थियों 1:2; प्रेरितों 20:28; **परमेश्वर का घराना:** इफिसियों 2:19; 1 तीमुथियुस 3:15; **प्रभु के चेले:** प्रेरितों 9:1; **परमेश्वर का मन्दिर:** 1 कुरिन्थियों 3:16; पहिलौठों की कलीसिया: इब्रानियों 12:23
मसीहियों के लिए पदनाम इफिसियों 3:15	**चेले:** प्रेरितों 11:26; **पवित्र लोग:** 1 कुरिन्थियों 1:2; फिलिप्पियों 1:1; **परमेश्वर की सन्तान:** गलतियों 3:26; 1 यूहन्ना 2:1; **भाई:** लूका 8:21; गलतियों 6:1; **मसीही:** प्रेरितों 11:26; 26:28; 1 पतरस 4:16
धर्मसार	**यीशु मसीह:** मत्ती 16:16-18; प्रेरितों 8:37
इमान और अमल का नियम: परमेश्वर का वचन	**सारा अधिकार:** मत्ती 28:18-20; रोमियों 1:16; इब्रानियों 4:12; **कलीसिया का इंतज़ाम:** 2 तीमुथियुस 3:16,17; 2 पतरस 1:3; **राज्य का बीज:** मत्ती 13:3; लूका 8:11; **आत्मा की तलवार:** इफिसियों 6:17
आराधना	**गाना:** कुलुस्सियों 3:16; **प्रार्थना:** 1 थिस्सलु. 5:17; **शिक्षा:** प्रेरितों 20:7; **प्रभु भोज:** प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11:23; **चन्दा:** 1 कुरिन्थियों 16:1, 2
मिशन	**आत्माएं बचाना:** मत्ती 28:18-20; यूहन्ना 6:45; इफिसियों 3:10; 1 तीमुथियुस 4:16
चेतावनी	**मसीह में बने रहो:** गलतियों 1:6-8; मत्ती 15:9, 13; 2 कुरिन्थियों 11:3; प्रकाशितवाक्य 22:18, 19; 2 यूहन्ना 9